जवाहरलाल नेहरु कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग

प्रेषक : *भोगल*
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी

क्रमांक 108
दिनांक 15.09.2021

जनेकृविवि के खेतों में उड़ा ड्रोन
ड्रोन आधारित खेती पर अनुसंधान शुरू

जबलपुर 15 सितम्बर। जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय अब खेती में ड्रोन का उपयोग करेगा और साथ ही खेती में ड्रोन के अनुप्रयोग पर अनुसंधान भी करेगा। आधुनिक और मशीनीकृत कृषि के वर्तमान युग में, ड्रोन के उपयोग ने महत्व प्राप्त कर लिया है और इसका उपयोग कई कृषि कार्यों को करने के लिए किया जा रहा है, जिसमें उर्वरकों, कीटनाशकों के साइट विशिष्ट अनुप्रयोग से शुरू होकर फसल के स्वास्थ्य पर जैविक और अजैविक कारकों के प्रभाव का सटीक रूप से पता लगाना शामिल है।

कुलपति डॉ. प्रदीप कुमार बिसेन के मार्गदर्शन में आज यहां फसल संरक्षण में ड्रोन प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग पर अनुसंधान विषयक परियोजना का उद्घाटन किया गया। मेसर्स सिनजेंटा इंडिया लिमिटेड, पुणे द्वारा प्रायोजित इस परियोजना के तहत जनेकृविवि के कृषि वैज्ञानिक सोयाबीन के क्षेत्र में विशेष अनुसंधान करेंगे। इस दौरान खेतों में तकरीबन 2 घंटे तक 16 लीटर क्षमता का छिड़काव टैंक लेकर ड्रोन उड़ाकर परीक्षण किया गया। यहां उपयोग में लाए गये ड्रोन से एक एकड़ में मात्र 6 मिनिट में कीटनाशक का छिड़काव आसानी से किया जा सकता है। इससे समय और श्रमशक्ति का बचाव होता है। इस मौके पर अधिष्ठाता कृषि संकाय डॉ. धीरेन्द्र खरे, संचालक अनुसंधान सेवायें डॉ. जी.के. कौतु, संचालक विस्तार सेवायें डॉ. दिनकर प्रसाद शर्मा, संचालक प्रक्षेत्र डॉ. डी.के. पहलवान, संचालक शिक्षण डॉ. अभिषेक शुक्ला, अधिष्ठाता कृषि अभियांत्रिकी महाविद्यालय डॉ. अतुल श्रीवास्तव, आईपीआरओ, डॉ. एम.ए. खान, प्रक्षेत्र प्रभारी डॉ. संजय सिंह, डॉ. मोनी थॉमस, डॉ. ए.के सक्सेना, डॉ. ए.के. पांडे, डॉ. आर.एस. मराबी, मैसर्स सिनजेंटा इंडिया लिमिटेड पुणे के प्रतिनिधि डॉ. अमोल शिटोले, और डॉ. एस.एस. बघेल उपस्थित रहे।

इस परियोजना में ड्रोन के उपयोग से कीटनाशकों की कीट नियंत्रण प्रभावकारिता का आंकलन किया जाएगा और हस्तचलित नैपसैक स्प्रेयर के साथ तुलना की जाएगी। विभागाध्यक्ष और परियोजना के प्रमुख अन्वेषक डॉ. एस.बी. दास ने बताया कि कीटनाशकों का जैव–प्रभावकारिता के अलावा, लाभकारी कीड़ों पर असर तथा स्प्रे से फसल पर फाइटोटॉक्सिसिटी प्रभाव, समय की बचत और लागत जैसे महत्वपूर्ण पहलूओं का मूल्यांकन भी किया जाएगा। सोयाबीन में प्रमुख पत्ती भक्षक कीट, जिसमें तम्बाकू इल्ली और हरी अर्धकुण्डलक इल्ली शामिल हैं। दोनों स्प्रे विधियों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाएगा। कीटनाशकों के ड्रोन अनुप्रयोग की उपयुक्तता का अध्ययन करने वाली यह पहली परियोजना है। जिसे बाद में राज्यभर में विस्तारित किया जायेगा।

–000–